८४ वर्ष की आयु में गुरुदेव

ये कुछ व्यक्तिगत भाव हैं क्योंकि गुरुदेव की शख्सियत के बारे में बहुत निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता! ८४ वर्ष की आयु में गुरुदेव का स्वास्थ्य पहले जैसा नहीं है। वे अपनी ऊर्जा का सावधानीपूर्वक संरक्षण करते हैं, कार्यों के बीच में आराम के लिए समय निकालते हैं और बिना किसी के दबाव में आये प्राथमिकता के अनुसार अपना समय और ऊर्जा लगाते हैं। दिन समाप्त होते –होते उनका कोई कार्य अधूरा नहीं रहता और यह देखकर आश्चर्य होता है कि वे किस प्रकार हमारी ई–मेल का जबाब उसी दिन दे देते हैं, चाहे वह प्रशासनिक कार्य हो या किसी अभ्यासी की व्याकुल पुकार।

गुरुदेव तरह– तरह के उपचार और दवाइयां सहर्ष ही ले लेते हैं। कभी–कभी तो ऐसा लगता है कि शायद वे यह सब, उपचार करने वालों की तसल्ली के लिए ही कर रहे हैं। धूप से बचने के लिए वे काला चश्मा पहनते हैं क्योंकि वे तेज रोशनी सहन नहीं कर सकते। भाई सतबीर या भार्गव (गुरुदेव का पोता) ई–मेल पढ़ने और उनका जवाब देने में उनकी सहायता करते हैं। हालांकि उनकी नजर कमजोर हो गई है लेकिन उनकी अन्तरेन्द्रियां पहले की भाँति ही अपनी पराकाष्ठा पर प्रतीत होती हैं। किसी भी व्यक्ति की उपस्थिति को वे देखने से ज्यादा महसूस करते हैं।

गुरुदेव का आहार बहुत हल्का होता है क्योंकि उन्हें बहुत सी चीजों की मनाही है। लेकिन वे खाने के लिए बादशाह की तरह बैठते हैं, उनकी टेबल पर हमेशा कुछ अभ्यासी उनके साथ होते हैं। वे शांत भाव से भोजन ग्रहण करते हैं (शायद वहाँ उपस्थित लोगों पर उनका कार्य चल रहा होता है) और कभी–कभी वहाँ संजीदा वार्तालाप या अर्थ से परिपूर्ण लतीफे होते हैं और यदि कोई उन्हें उकसा सके तो वे बड़े हाज़िर जबाब होते हैं।

गुरुदेव, सैर के लिए कभी–कभार ही जा पाते हैं, लेकिन अपने कमरे में वॉकर की सहायता से कसरत करते हैं। जब भी उनकी तबियत थोड़ी नरम होती है तो डॉक्टर मोहनसेलवान को बुलाया जाता है। गुरुदेव 'सहज मेडिकल सैंटर' में दंत–चिकित्सक के पास भी कभी–कभार जाते हैं। लेकिन वे अपनी स्वास्थ्य समस्याओं को कभी भी अपने ऊपर हावी नहीं होने देते और अपनी बीमारियों से जूझते हुए भी वे खुशमिज़ाज़ रहते हैं।

मिशन के भारी विस्तार की जिम्मेदारी उठाते हुए गुरुदेव के कार्य और दायित्व कई गुणा बढ़ गए हैं। वे अपनी गोल्फ कार्ट में घूमते समय उनसे मिलने को आतुर लोगों से मुलाकात, अभिवादन और बातचीत करते हैं। भारत के विभिन्न केंद्रों के अभ्यासियों को मणपाक्कम, तिरुप्पूर या कोलकाता, वो उस समय जहाँ भी मौज़ूद हों, वहाँ आकर कुछ दिन उनके सामीप्य में रहने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। आश्रमों में बहुत सारे अभ्यासियों को उपस्थित देखकर उन्हें बहुत अच्छा लगता है और वे अकसर सत्संग करवाते हैं।

ओमेगा स्कूल, सतकोल आश्रम, क्रेस्ट और रिट्रीट सेंटर जैसी गुरुदेव की कृतियां, उनका उतना ही ध्यान आकर्षित करती हैं; जितना कि भारत भर के महत्वपूर्ण आश्रम और केन्द्र। शारीरिक असुविधा के बावजूद वे वहाँ जाने के लिए समय निकालते हैं। हालांकि उन्होंने विदेशों की यात्रा बंद कर दी है, क्योंकि हवाई–जहाज की लंबी यात्राओं के दौरान वे बैठ नहीं पाते। भारत में वे यथासंभव सड़क–मार्ग से यात्रा करना पसंद करते हैं।

गुरुदेव, बच्चों की ओर विशेष ध्यान देते हैं चाहे वे ओमेगा स्कूल के छात्र हों या अभ्यासी अभिभावकों के साथ आए हुए बच्चे। वे उनसे बात करने, छोटे बच्चों का नाम रखने, बड़े लोगों के साथ हँसी–मजाक करने तथा अपनी छड़ी से बच्चों का सिर स्पर्श करने के लिये रुकते हैं। पहले से ही एक नई पीढ़ी उनके सामने बढ़ती हुई दिखाई दे रही है, जो गुरुदेव द्वारा पिछले २५ वर्षों में, २००० से भी अधिक सहज मार्ग विवाह सम्पन्न करवाने का परिणाम है।

गुरुदेव बहुत संजीदा, विनोदी हैं और उनमें युवाओं के समान जोश है। उनकी स्मरण शक्ति हमेशा की तरह गज़ब की है। उन्होंने दाढ़ी बढ़ाई हुई है लेकिन वह बाबूजी की दाढ़ी की तुलना में छोटी है। शुरू– शुरू में हम में से कुछ लोगों को अजीब सा लगा था, लेकिन अब हमें लगता है कि वे पहले की ही भाँति आकर्षक नजर आते हैं। बहुत पहले गुरुदेव ने मुझे बताया था कि जब वे छोटे थे तो उनकी एक आन्टी उन्हें कहा करती थी, 'तुम्हारे भीतर भगवान क़ृष्ण के कुछ पहलू (अंश) हैं। जब तुम ९० वर्ष के हो जाओगे, तब भी तुम में आकर्षण कायम रहेगा।' सचमुच शेक्सपीयर के शब्दों में, 'उम्र तुम्हें मुरझा नहीं सकती, रीति–रिवाज तुम्हारी असीम कीर्ति को अप्रासंगिक नहीं बना सकते।'

ए. पी. दुरई

गुरुदेव की दिनचर्या

गुरुदेव की पोती ने उनकी दैनिक दिनचर्या का सारांश पेश किया है, जैसा उसने नज़दीक से देखा है।

दिन की शुरुआत प्रात: ४.३० बजे– रात की बेचैनी भरी नींद के बाद गुरुदेव पौ फटते ही उठ जाते हैं। वे तत्काल अपने प्रात:कालीन ध्यान के लिए तैयार हो जाते हैं, जो उसी समय प्रारंभ हो जाता है।

प्रात: ५.३० बजे : अपनी साधना पूरी करते ही वे कॉफी पीने और सुबह की मन्द हवा का आनन्द लेने के लिए बरामदे में आकर बैठ जाते हैं। इस समय तक अभ्यासी तैयार होकर उनके आने का पूर्वानुमान लगाकर उनके सान्निध्य में रहने के लिए धीरे-धीरे प्रवेश करना शुरू कर देते हैं। गुरुदेव खुशी से उनके अभिवादन स्वीकार करते हुए उन्हें अपने पास बैठने के लिए कहते हैं।

प्रात: ६.१५ बजे : इस समय तक कॉफी से फ़ारिग होने के बाद वे दिन का कार्य प्रारंभ करने के लिए अपने ऑफिस में चले जाते हैं। इसकी शुरुआत वे हर रोज़ आने वाली ई-मेल से करते हैं और अथक रूप से उन सब के जबाव भेजते हैं।

प्रात: ७.०० बजे : वे अलग-अलग केंद्रों में कार्य करने के लिए दो प्रशिक्षक तैयार करने का कार्य शुरू करते हैं। जब तक यह कार्य पूरा होता है, तब तक ८.०० बज गये होते हैं और नाश्ते का समय हो जाता है।

प्रात: ८.३० बजे : गुरुदेव नाश्ता करने के बाद अपने कमरे में लौट आते हैं। वे उपस्थित अभ्यासियों से मुलाकात करते हैं, उनके साथ बातचीत करते हैं और इस बात का पूरा ध्यान रखते हैं कि अपने ऑफिस जाने से पहले वे नवविवाहित जोड़ों, बच्चों, जन्मदिन वाले व्यक्तियों और दूर-दराज से आए हुए लोगों से मिल लें। वहाँ उपस्थिति लोगों को वे ९.०० बजे सिटिंग देने का वायदा करते हैं।

प्रात: १०.०० बजे : सिटिंग के बाद वे पुन: अपने ऑफिस चले जाते हैं और केंद्र प्रशासन, आश्रम, वित्त सम्बन्धी और नई इमारतों आदि के कार्य को देखते हैं और बाद में कुछ महत्वपूर्ण पदाधिकारियों के साथ मीटिंग करते हैं।

प्रात: ११.३० बजे : दोपहर के खाने से पहले वे आधे घंटे तक कम्प्यूटर पर रूसी भाषा सीखते हैं।

दोपहर १२.३० बजे : संयोगवश तीन रूसी लोगों को उनके साथ लंच करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। वे भाषा का अभ्यास करते हुए उनके साथ का आनंद लेते हैं।

दोपहर १.३० बजे : अब गुरुदेव एक छोटी डाक्यूमेंटरी देखने जाते हैं, अधिकांशत: वे पशुओं के जीवन से संबंधित कोई डाक्यूमेंटरी चुनते हैं।

२.३० बजे : दोपहर के विश्राम के लिए अपने शयनकक्ष में चले जाते हैं। आधे घंटे तक कोई पुस्तक पढ़ते हैं और फिर सो जाते हैं।

सायं ५.०० बजे : वे उठते हैं और करीब आधे घंटे तक श्वास-व्यायाम करते हैं और कॉफी के लिए तैयार होते हैं। इसके बाद वे अपनी गोल्फकार्ट में मणपाक्कम आश्रम का चक्कर लगाते हैं, रास्ते में प्रत्येक व्यक्ति से मिलते हैं और नये ऑडिटोरियम ब्लॉक के निर्माण की प्रगति का जायज़ा लेते हैं। रास्ते में वे अल्पाहार के लिए वहाँ एकत्रित लोगों के साथ कैंटीन में जाते हैं।

सायं ५.३० बजे : गुरुदेव बाहर बगीचे में अभ्यासियों के साथ बैठते हैं और बाबूजी के साथ शाहजहाँपुर में बिताए दिनों के बारे में चर्चा करते हैं। तब वे उसके बाद एक सिटिंग देते हैं, जो करीब ४५ मिनट तक चलती है और उसके उपरांत सायं के कार्य के लिए अपने ऑफिस चले जाते हैं।

सायं ७.३० बजे : अपनी नई सभी ई-मेल का जबाव देने और अपनी डायरी को लिखने के बाद गुरुदेव रात्रि-भोज के लिए चले जाते हैं।

सायं ८.३० बजे : अब यह मूवी का समय है। वे किसी अभ्यासी द्वारा लाए गए संग्रहण से एक मूवी चुनते हैं और सबके साथ बैठ कर देखते हैं।

रात्रि १०.३० बजे : दिन भर की थकान के बाद वे शयनकक्ष में चले जाते हैं।

गुरुदेव तिरुप्पूर में :

गुरुदेव १६ अप्रैल को तिरुप्पूर डायमेंड जुबली पार्क आश्रम में पधारे। रविवार, १८ तारीख की सुबह ७.३० बजे के सत्संग में ३,००० से अधिक अभ्यासी उपस्थित थे । शाम को वे चेट्टीपालयम् में स्थित योगाश्रम गए। उन्होंने आश्रम और मास्टर कॉटेज के रख-रखाव को सराहा। थोड़ी देर रुकने के बाद वे डी. जे. पार्क लौट आए।

१९ अप्रैल की शाम को गुरुदेव कांगेयम आश्रम पहुँचे, जो तिरुप्पूर से लगभग ३० किलोमीटर दूर है। वातावरण बहुत खूबसूरत था और गुरुदेव ने ध्यान-कक्ष के बाहर नीम के पेड़ की छाया में सिटिंग दी। इस सत्संग में आसपास के केंद्रों से आए हुए ३०० अभ्यासियों ने भाग लिया।

२३ अप्रैल को गुरुदेव ने आश्रम में रविवार का सत्संग करवाया । वे प्रतिदिन ठंडी हवा और प्राकृतिक दृश्यों का आनंद लेने के लिए शाम को बगीचे में बैठा करते थे।

जब गुरुदेव वहाँ पर थे, उस समय बाबूजी के जन्मदिन समारोह की तैयारियां जोर-शोर से चल रही थीं। अन्य केंद्रों से आये हुए अनेक स्वयंसेवक, समारोह की तैयारी में लगे हुए थे। इस समारोह के लिये १५,००० लोगों की क्षमता वाला एक बड़ा सा ध्यान-कक्ष बनाया गया था।

पूज्य बाबूजी का जन्मदिन समारोह २९ अप्रैल से १ मई तक शान्त वातावरण में सम्पन्न हुआ। डायमेंड जुबली पार्क बहुत विशाल नजर आ रहा था, ध्यानकक्ष और गुरुदेव का मंच फूलों द्वारा खूबसूरत ढंग से सजाया गया था। गुरुदेव ने वहाँ एकत्रित ९,००० अभ्यासियों को सत्संग करवाया । सत्संग के बाद उन्होंने सी डी, डी वी डी तथा पुस्तकों का विमोचन किया ।

३० तारीख को शाम ५.१५ बजे गुरुदेव ने सत्संग करवाया। बाद में पुणे केंद्र (महाराष्ट्र) से आए हुए अभ्यासियों से की गई मुलाकात के दौरान उन्होंने इस बात पर चर्चा की कि अभ्यासी, गुरुदेव से इस बात की अपेक्षा करते हैं कि गुरुदेव उन पर ध्यान दें । गुरुदेव ने बताया कि जब हम गुरू के सामीप्य में होते हैं, तो हमें अंहकार मुक्त रहना चाहिए और किसी भी चीज की उनसे अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

५ मई को प्रात: गुरुदेव, कोयम्बतूर आश्रम के लिये रवाना हुए और सुबह ९.०० बजे का सत्संग करवाया। इस सत्संग में १००० से अधिक अभ्यासियों ने भाग लिया।

ाम को उन्होंने कोयम्बतूर से मलमपुड़ा के लिये प्रस्थान किया । मलमपुड़ा में बहुत गर्मी तथा मौसम शुष्क था । गुरुदेव की योजना थी कि वे रिट्रीट सेंटर में एक रात रुककर अगले दिन सुबह नाश्ते के बाद रवाना हो जायेंगे। अगली सुबह कुछ हाथियों की भिडंत के कारण सड़कें अवरुद्ध थी और यातायात रुका हुआ था। अत: गुरुदेव को अपना प्रवास आगे बढ़ाना पड़ा। उन्होंने कहा, 'मेरे मालिक (बाबूजी) चाहते हैं कि मैं यहाँ ठहरूँ।'

७ मई को गुरुदेव तिरुप्पूर लौटे और ९ तारीख को प्रात:काल डी. जे. पार्क में करीब १,५०० अभ्यासियों को रविवार का सत्संग करवाया।

१० मई को गुरुदेव ने विभिन्न केंद्रों के अभ्यासियों को तिरुप्पूर आकर अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित करने का निश्चय किया। अत: राजपालयम, श्रीबिल्लीपुथुर, हैदराबाद तथा मदुरै जोन के सभी केंद्रों से अभ्यासियों को आमंत्रित किया गया । ११ मई के बाद से डी जे पार्क में अनेक अभ्यासी एकत्रित हुए।

११ से १६ मई तक गुरुदेव ने प्रात: ६.३० बजे सत्संग करवाया। इन दिनों विभिन्न केंद्रों से आए हुए १५०० से ज्यादा अभ्यासी उपस्थित थे। १६ मई को शाम के सत्संग के बाद उन्होंने सभी अभ्यासियों को, पिछले कुछ दिनों से उनके साथ होने के लिए धन्यवाद दिया । इस सत्र का समापन एक भाषण के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने अभ्यासियों से आग्रह किया कि वे अपनी नियमित साधना करते हुए और १० नियमों का अनुपालन करते हुए, प्राणाहुति द्वारा दिये गये खज़ाने को अपने दिलों में सुरक्षित रखें । वार्ता के अंत में गुरुदेव ने आश्वासन दिया कि इस प्रकार के कार्यक्रम (गुरुदेव के साथ अनवरत सत्संग) भविष्य में जारी रखे जाएंगे । उन्होंने सभी अभ्यासियों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि अगली बार वे अपने ह्रदय को और ज्यादा तैयार करके लौटें; जिससे कि गुरुदेव उनके ह्रदय को ज्यादा से ज्यादा भर सकें ।

तिरुप्पूर में एक महीने के लंबे प्रवास के बाद वे १९ तारीख की दोपहर में कोयम्बतूर के लिए रवाना हुए । वहाँ, वे एक अभ्यासी के घर ठहरे तथा अगली प्रात: सत्संग करवाया ।

Malampuzha

Coimbatore

With LMOIS Students

Chennai

चेन्नई में वापसी

मालिक २१ मई को सुबह ११:३० बजे चेन्नई पहुँचे। अगले तीन सप्ताह तक वे गायत्री और मणपाक्कम आश्रम के बीच आते-जाते रहे। काफी लम्बे अरसे के बाद २३ मई को, पहले रविवार के सत्संग वाले दिन चेन्नई के अभ्यासी बहुत उल्लासित थे। गायत्री में अपने प्रवास के दौरान, वे कई बार शाम के समय, वहाँ उपस्थित अभ्यासियों के साथ शान्त वातावरण का लुफ़्त उठाने 'मरीना बीच' गये।

लालाजी मेमोरियल ओमेगा इंटरनेश्नल स्कूल के दसवी कक्षा के विद्यार्थियों ने बोर्ड की परीक्षा में १००% पास होने का रिजल्ट दिया। २८ मई को गुरुदेव, विद्यार्थियों को उनके उत्तम प्रदर्शन के लिये बधाई देने गए। शाम के वातावरण में चारों तरफ खुशियां फैली हुई थीं और वार्तालाप सत्र जारी था। गुरुदेव ने वहाँ एकत्रित छात्रों को जीवन के बेहतरीन उपयोग के महत्व पर बल दिया। मालिक ने कहा, "मै हमेशा बच्चों से कक्षा में अव्वल न आने के लिए कहता हूँ। यदि आप हमेशा कक्षा में प्रथम आते हैं, तो हर बार लोगों की उम्मीदें आपसे बढ़ती जाती हैं। हमारे ज़माने में कोई श्रेणी नहीं होती थी। सिर्फ विषय का सच्चा ज्ञान ही मायने रखता था।" उन्होंने जीवन को सम्पूर्ण तरीके से जीने के बारे में बताते हुए कहा कि हमें जीवन में सम्पूर्णता लानी चाहिये। हमें सिर्फ अपनी शिक्षा और पेशे को ही नहीं बल्कि दान, आपसी संबंध, अच्छा-व्यवहार और पूर्णरूपेण खुशी को भी महत्व देना चाहिये।

६ जून को सत्संग के पश्चात गुरुदेव ने ८ विवाह समपन्न करवाये। दिन के दौरान उन्होंने अभ्यासियों से बातचीत की। करनूल, आन्ध्र प्रदेश से करीब १५० से अधिक अभ्यासी ७ जून को गुरुदेव के साथ कुछ दिन बिताने के लिये वहाँ पहुँचे। अपनी दिनचर्या से थोड़ा हटकर उन्होंने वहाँ उपस्थित सभी अभ्यासियों के साथ 'रुचि कैफे' (आश्रम कैन्टीन) में रात्रि का भोजन लिया।

सामान्यतः शाम के समय सभी अभ्यासी बड़े अनुशासित थे और उनके साथ रहते हुए भी उन्होंने प़र्याप्त फासला बनाये रखा। ऐसा ही अनुशासन तब भी देखने को मिला, जब गुरुदेव अपने घर से आश्रम वापस आये, तब दक्षिण आन्ध्र प्रदेश से आये हुए १२०० अभ्यासी, पूरे आश्रम के चारों तरफ धैर्यपूर्वक उनके स्वागत के लिये प्रतीक्षा कर रहे थे। शाम को आश्रम के दौरे के समय गुरुदेव नये औडिटोरियम ब्लॉक के निर्माण कार्य का जायज़ा लेते थे। अगले तीन दिनों तक उन्होंने दूर दराज के इलाके से मणपाक्कम आये हुए अभ्यासियों के हित को ध्यान में रखते हुए ध्यान-कक्ष में ज्यादातर सत्संग करवाये।

१२ की दोपहर को आन्ध्र प्रदेश से आये हुए ६० अभ्यासियों का उन्होंने अपने घर पर स्वागत किया और बड़े धैर्यपूर्वक उनके पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दिये और दोपहर के खाने के बाद उन्हें विदा किया।

१३ तारीख को ७.३० बजे के सत्संग में ५००० से भी अधिक अभ्यासी उपस्थित थे। उसके बाद गुरुदेव ने दो जोड़ों को विवाह-बन्धन में बाँधा। अभ्यासियों के साथ एक अनौपचारिक वार्तालाप में दिव्य चेतना के बारे में चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि "ध्यान के वक्त हर अभ्यासी को अलग-अलग अनुभव होते हैं और वह सभी सही हैं। ऐसा इसीलिये होता है क्योंकि दिव्यता का हम सबके साथ एक विशेष नाता है और यह अपने आप को हमारे साथ एक कर लेती है। यह तभी होता है जब हर व्यक्ति ईश्वर के साथ वैसे ही प्रतिध्वनित (एकरस) होता है जैसेकि वीणा के तार के साथ ट्यूनिंग फ़ोर्क पूर्ण समरसता से तारतम्य हो जाता है, तभी वास्तविक ईश्वरीयता प्राप्त होती है।" सभी लोग इस वार्तालाप में पूर्णतः मग्न हो गये थे। उसके बाद उन्होंने उपस्थित लोगों को सिटिंग दी।

नये उत्तरदायित्व

भाई के. टी. मन्जुनाथ	डायरेक्टर, रिट्रीट सेन्टर पनशेट, पुणें
भाई डा. ए. पेरुमल	डायरेक्टर, क्रेस्ट, बेंगलोर

ज़ोन- प्रभारी

भाई शेशाद्री वेंकट	दक्षिण कर्नाटक
भाई टी. वी. विश्वनाथ	दक्षिण तमिलनाडु
भाई मनोज तिवारी	बिहार और झारखंड
भाई एस. प्रकाश	उत्तर तमिलनाडु

केन्द्र प्रभारी

भाई प्रभाकर रावूरी	बैंगलोर
भाई शेखर रॉय	भुवनेश्वर

क्षेत्र-प्रभारी

भाई प्रसन्न कृष्णा	ओशियाना
भाई एन. एस. नागराज	यूरोप
भाई शरत हेगडे	अफ्रीकी महाद्वीप और हिन्द महासागर द्वीप
भाई नितिन गोविल्ला	सुदूर पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया
भाई विनोद मिश्रा	चीन
भाई विलियम वेकॉट	लैटिन अमेरिका और कैरीबीन
भाई सन्तोष श्रीनिवासन	कनाडा और यू. एस. ए.
भाई श्रीधर कादम्बी	फ़ारमर सी. आई. एस. देश
भाई आशीष सिंह	दक्षिण एशिया (श्री लंका, भूटान, पाकिस्तान, नेपाल और बांग्लादेश)

अतीत के झरोखे से

१९७२ में बाबूजी की पहली विदेश यात्रा के दौरान जब गुरुदेव उनके साथ गये थे, तब उन्होंने विस्तृत रूप से अपनी डायरी में सब रिकार्ड किया था, उसे 'इन्डिया इन द वेस्ट' नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया है। यहाँ पर उस यात्रा की कुछ झलकियां दी जा रही हैं।

मिश्र : बाबूजी १६ अप्रैल १९७२ को शाहजहाँपुर से दिल्ली के लिये रवाना हुए। २० अप्रैल को वे हमारे गुरुदेव के साथ मुम्बई गये और वहाँ से उन्होंने अगले दिन कैरो के लिये प्रस्थान किया।

इटली: वे ९ दिन रोम में रहे और बहुत अभ्यासियों से मुलाकात की। वे अभ्यासियों के घर गए, वहाँ जिज्ञासुओं को प्रथम सिटिंग दी, उनके प्रश्नों के उत्तर दिये तथा नए प्रशिक्षक बनाए। एक स्थानीय सभा में हमारे गुरुदेव ने 'सहज मार्ग के प्रकाश में धर्म और आध्यात्मिकता' पर एक वार्ता भी दी।

फ्राँस, २९ अप्रैल– इस दौरान उन्होंने कई जगहों की यात्रा की जैसे नीस, मारसीलीज़, ली ब्यूसैट और पेरिस। एक शाम को बाबूजी महाराज एक फ्रेंच सज्जन के साथ बातचीत में तल्लीन थे, जो कई साल पहले तिब्बत में एक वर्तमान लामा के मार्गदर्शन में कई साल गुजार कर आये थे तथा उन्होंने अपनी तीसरी आँख खुलवाने के लिये बताया गया ऑपरेशन करवाया था। बाबूजी ने उनसे कहा कि वो बाबूजी के बारे में मनन करके बतायें कि उनका बाबूजी के बारे में क्या कहना है। उन सज्जन ने कहा कि उनके हिसाब से बाबूजी के गुरुदेव हमेशा उनके साथ रहते हैं। बाबूजी ने इस बात को स्वीकार किया। तब उन सज्जन ने बाबूजी को प्राणाहुति दी और बाबूजी ने उनके ऐसा करने की भी पुष्टि की। बाबूजी उनकी लगन और अपने गुरु के प्रति उनकी श्रद्धा को देखकर काफी प्रभावित हुए और बार- बार उनकी तारीफ़ करते रहे।

डेनमार्क: बाबूजी और गुरुदेव के आगमन पर कोपेनहेगन के अभ्यासियों ने उनका गर्मजोशी के साथ स्वागत किया।

१२ मई को डेनिश रेडियो ने बाबूजी का 'इन्टरव्यू' लिया, जिसमें हमारे गुरुदेव ने भी कुछ उत्तरों का स्पष्टीकरण किया। दूसरे देशों से भी बहुत से अभ्यासी बाबूजी से मिलने डेनमार्क पहुँचे। कोपनहेगन में स्थानीय अखबारों में विज्ञापन के ज़रिये आम सभाओं का आयोजन किया गया, जिसमें सहजमार्ग का परिचय दिया गया। इसमें ३०० से अधिक लोगों ने भाग लिया।

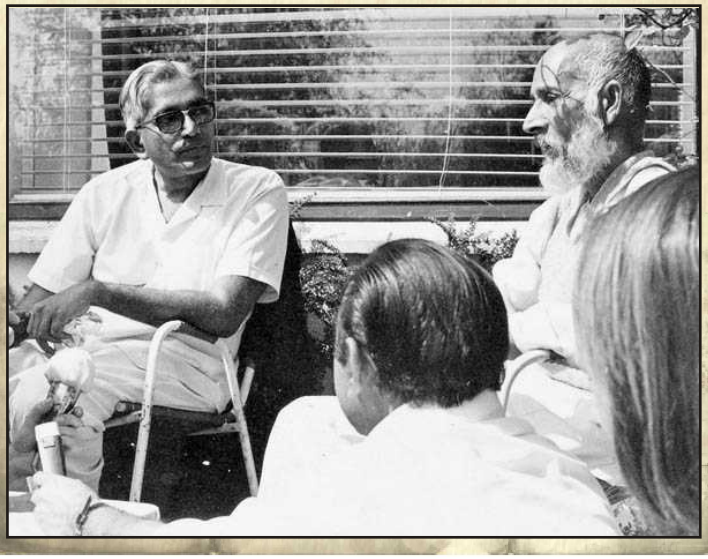

वी. बी. एस. ई प्रशिक्षण कार्यशाला, चेन्नई

बाबूजी मेमोरियल आश्रम, चेन्नई में दक्षिण ज़ोन के अभ्यासियों के लिए अप्रैल के अन्तिम सप्ताह में तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कुल मिलाकर ७५ अभ्यासियों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। इसमें एक दर्जन से अधिक शिक्षक एवं स्कूल के ३ प्रधानाचार्य भी शामिल थे। कार्यशाला में एल.एम.ओ.आई.एस और स्मृति द्वारा तैयार किये जाने वाले नवीन पाठ्यक्रम पर चर्चा की गई और प्रतिभागियों से आग्रह किया गया कि वे पाठ्यक्रम के अध्याय, विद्यार्थियों की मूल्यांकन पत्रिका एवं अभिभावकों के लिये तैयार किये गये सुझाव फ़ार्म पर अपनी राय दें। इसका परिणाम बहुत ही अच्छा रहा और सभी प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़ कर अपना योगदान दिया।

पाठ्यक्रम बनाने का कार्य प्रगति पर है तथा ऐसी आशा की जाती है कि प्राथमिक स्कूल का पाठ्यक्रम शीघ्र ही बनकर तैयार हो जाएगा।

वी.बी.एस.ई ग्रीष्मकालीन कैंप, भोपाल

भोपाल केन्द्र में ८-९ तारीख को वी.बी.एस.ई ग्रीष्मकालीन कैंप का आयोजन किया गया, जिसमें ७६ बच्चों ने अपना नाम पंजीकृत किया। इसमें से २६ बच्चे गैर अभ्यासी परिवारों से आये थे।

कार्यक्रम के पहले दिन बच्चों का स्वागत बड़ी गर्मजोशी के साथ गुलाब का फूल देकर किया गया। इसके पश्चात बच्चों ने "अपने आप को अभिव्यक्त करना" गतिविधि के अंतर्गत अपना परिचय दिया। बच्चों के सदाचार एवं दुराचार पर आधारित एक हास्य नाटिका प्रस्तुत की गई, जिसे बच्चों ने जिज्ञासा से देखा। ईश्वर, गुरु एवं ईश्वर का हमारे अन्दर अस्तित्व- इन सभी धारणाओं को छोटी-छोटी प्रस्तुतियों के माध्यम से दर्शाया गया। कागज़ की नाँव बनाना एवं औरीगेमी की गतिविधियों का बच्चों ने लुफ्त उठाया।

दूसरे दिन "प्रकृति के निकट" विषय के अंतर्गत जीवन के पाँच तत्वों- वायु, पृथ्वी, अग्नि, जल और आकाश को वर्णित किया गया। समय-प्रबंधन, मन का शुद्धिकरण, विभिन्न परिस्थितियों को कठपुतली के माध्यम से सम्भालना, कागज़ के खिलौने और मूल्यों पर अन्तरदृष्टि आदि विषयों पर गतिविधियां आयोजित की गई तथा जल-संरक्षण, भाईचारा एवं मानवीय मूल्यों की मान्यता पर प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम में हर बच्चे की भागीदारी हेतु सभी बच्चों को लघु नाटक, कविताएं, गीत, सामूहिक-गान आदि प्रस्तुत करने को कहा गया। प्रतिदिन सुबह एवं रात को सोने से पहले बच्चों को मिशन की प्रार्थना करने को कहा गया। कैम्प का समापन केन्द्र प्रभारी भाई प्रभाकर दास के सारगर्भित भाषण और बच्चों को स्मृति-चिन्ह के वितरण के साथ हुआ।

वी.बी.एस.ई. की गतिविधियां

१२ से १७ अप्रैल के दरमयान, मुज़फ्फरपुर केन्द्र के विभिन्न स्थानों पर वी.बी.एस.ई. के कार्यक्रम और जन-सभाएं आयोजित की गईं। श्री आर. एस. चौहान, देहरादून के लेटि. कर्नल डॉ. मनु चोपडा, गाजियाबाद की बहन चन्द्रकांता, श्रीमती मधु रोहिल्ला, कर्नल अनिल कुमार एवं मुजफ्फरपुर के केन्द्र-प्रभारी भाई संजीव भारती इस संचालन समिति के सदस्य थे। इस कार्यक्रम के गहन प्रभाव हेतु, समिति के सदस्यों ने स्थानीय कॉलेज के प्राध्यापकों, शिक्षकों एवं सेना के अधिकारियों से विचार-विमर्श किया।

१२ अप्रैल को बिहार और झारखन्ड के ज़ोन प्रभारी भाई जी. एम. भटनागर की उपस्थिति में वी.बी.एस.ई. श्रृंखला सत्र की शुरुआत पटना केन्द्र से हुई। इस सत्र में बिहार राज्य के विभिन्न केन्द्रों से आये हुए करीब ५० अभ्यासियों ने भाग लिया।

तत्पश्चात दल के सदस्यों ने मुज़फ्फरपुर केन्द्र की ओर प्रस्थान किया, जहाँ १३ अप्रैल को दयालू सिंह कॉलेज में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

१४ अप्रैल को बहन चन्द्रकान्ता और बहन मधु रोहिल्ला ने १५१ आई.एन.एफ़. बटा. (टीए) जट, मुज़फ्फरपुर में एक जन-सभा का आयोजन किया, जहाँ उन्होंने वी.बी.एस.ई. के महत्व को प्रदर्शनों के द्वारा दर्शित किया। इस कार्यक्रम में १२५ से अधिक प्रतिभागी उपस्थित थे।

१५ अप्रैल को इस संचालक दल को 'होली मिशन सीनियर सेकन्डरी स्कूल' के शिक्षकों से बहुत ही रुचिकर एवं सार्थक परिसंवाद का अवसर प्राप्त हुआ। कर्नल अनिल रोहिल्ला ने श्रोताओं को आध्यात्मिकता के बारे में विस्तार से समझाया।

१६ अप्रैल को डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, मलीघाट में वी. बी. एस. ई. का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें करीब ५० शिक्षकों ने हिस्सा लिया।

१७ अप्रैल को मधुबनी में आयोजित वी.बी.एस.ई. के कार्यक्रम में ६० शिक्षकों ने भाग लिया, जो इसका प्रशिक्षण भी ले रहें हैं। मधुबनी, मुज़फ्फरपुर से तकरीबन ११० कि.मी. की दूरी पर है।

५ मई से जामनगर केन्द्र ने ५ से १३ वर्ष के आयुवर्ग के बच्चों के लिये वी.बी.एस.ई. की एक महीने तक चलने वाली तृतीय कार्यशाला आयोजित की। इस कार्यशाला में ८० बच्चों ने भाग लिया, जिसमें ४० बच्चें नियमित रूप से उपस्थित थे। कार्यशाला में गुरु, प्रेम, प्रार्थना, अनुशासन और विनम्रता जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया। प्रतिदिन प्रार्थना के बाद बच्चों को उनके मनपसंद का कोई खेल खेलने के लिये प्रोत्साहित किया जाता था।

कार्यशाला के अंतिम दिन, प्रतिभागी बच्चों के अभिभावकों को ध्यान-कक्ष में आयोजित समापन-समारोह में आमंत्रित किया गया। इस कार्यक्रम में १०० से अधिक लोग, बच्चों के द्वारा बनाई गई प्रस्तुतियों को देखने आये। प्रतिभागियों को 'सुंदरता एवं सेवा भाव' के प्रतीक के रूप में एक गुलाब का पौधा उपहार स्वरूप भेंट किया गया। अभिभावकों ने बताया कि कार्यशाला में भाग लेने के पश्चात् बच्चों ने टी.वी. के कार्यक्रम देखना कम कर दिया है। इसके साथ ही, बच्चों ने सुबह की प्रार्थना, भोजन से पूर्व एवं रात को सोने से पहले प्रार्थना शुरू कर दी है।

म.प्र. के विदिशा केन्द्र में १५ से १६ मई, २०१० तक दो दिन का वी.बी.एस.ई. ग्रीष्म कालीन कैम्प का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के पहले दिन, "ईश्वर एवं गुरू," "विनम्र बनें एवं दूसरों का सम्मान करें" जैसे विषयों को परिचर्चा में शामिल किया गया। बहन अंजली और भाई प्रमोद ने स्वयंसेवी दल के साथ मिलकर नाटिकायें, खेल-क्रियायें तथा विज्ञान के प्रयोगों आदि के माध्यम से इन मूल्यों को संचारित करने का कार्यक्रम आयोजित किया। दूसरे दिन का विषय 'अनुशासन' था तथा इसे भिन्न-भिन्न गतिविधियों द्वारा समझाया गया। स्वास्थ्य-संरक्षण हेतु बच्चों को योग के बारे में भी बताया गया।

जौरा, इन्दौर

१२ -१३ मई को जौरा, इन्दौर में जैन युवा समूह द्वारा ९ दिवसीय आवासीय कैंप आयोजित हुआ, जिसमें वी बी एस ई ने आखिरी दो दिनों में हिस्सा लिया।

दस स्वयंसेवी भाइयों एवं बहनों ने इस कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें सभी अभ्यासियों को ५ सत्रों में विभाजित कर मुख्यतः ५ मूल्यों - प्रेम, आदर, विचारों का आदान-प्रदान और श्रवण, सहयोग एवं सहभागिता पर प्रकाश डाला गया। मूल्यों को तीन सत्रों में, निम्न सूत्रों के अन्तर्गत बाँटा गया- "अपने वातावरण, अपने स्वयं के तथा अपने गुरुदेव के सन्दर्भ में नैतिक मूल्यों की उपादेयता।"

कार्यक्रम में १३ से १६ वर्ष के आयु वर्ग के ४० बच्चों नें भाग लिया। प्रथम सत्र बहन यामिनी कर्माकर एवं भाई राजेश रावेरकर ने संचालित किया, जो कि उदाहरण एवं प्रयोगों से ओत-प्रोत था। अंत में बच्चों ने कहा कि वे नैतिक मूल्य ही हैं, जो हमें विकास, आनन्द एवं हल्केपन की ओर ले जा रहे हैं।

शारीरिक अभिव्यक्ति समझना और तदानुसार अच्छे स्वास्थ्य के लिये कार्य

करना, उचित व्यवहार, असफलता ही सफलता की सीढी, उदारवादी दृष्टिकोण का विकास, बड़ों का आदर, संचार, सहयोग, दूसरों का ख्याल रखना और सहभागिता जैसे मूल्यों को समझाने हेतु सत्र आयोजित किये गये। भाई शेखर शर्मा, बहन प्रीति शर्मा और बहन विनीता रावेरकर ने इसे कहानियों, लघु नाट्य एवं वैज्ञानिक प्रयोगों के माध्यम से प्रस्तुत किया। हँसी और आँसुओं से भरे इस सत्र में संदेश को सुचारु रूप से प्रतिभागियों तक पहुँचाया गया।

तृतीय सत्र में सर्वशक्तिमान से सम्बंधित मूल्यों: जैसे वह हमारे अंदर विराज़मान हैं, ईश्वर को किया गया प्रेम और सम्मान- अपने साथियों को प्रेम करने में झलकना चाहिए तथा प्राकृतिक संसाधनों का उचित प्रयोग आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया। अंततः प्रतिभागियों को ४ समूह में विभाजित कर, प्रत्येक को दिये गये विषय पर अपने विचार व्यक्त करने को कहा गया। इस सत्र का संचालन भाई विनोद साठे, भाई श्रीराम द्रविड और भाई राजेश ने किया।

प्रतिभागी बच्चों को अपने भावी जीवन में होने वाले वांछित परिवर्तन की सूची बनाने को कहा गया। बिन्दू छोटे किन्तु व्यावहारिक थे। इससे मिली प्रतिक्रिया ने स्वयंसेवी दल को प्रफुल्लित कर दिया। वी.बी.एस.ई. के माध्यम से गुरुदेव द्वारा दी गई खुली सोच, लचीलापन एवं दिव्यता ने सभी के दिल को छू लिया।

समापन समारोह में संचालन समिति के सदस्य एवं शहर के सामाजिक कार्यकर्ताओं को आमन्त्रित किया गया। इस अवसर पर भाई राजेश ने मिशन के बारे में एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी।

प्रकाश के नये केन्द्र

कसरगोड़, केरल

२ मई २०१० को कसरगोड़ केन्द्र में नये ध्यान-कक्ष का उद्घाटन किया गया। कसरगोड केन्द्र की स्थापना जनवरी २००७ में हुई थी। यह केन्द्र बेला गाँव में है, जो कसरगोड़ शहर से १६ कि.मी. की दूरी पर केरल की उत्तरीय सीमा में स्थित है। यह ध्यान-कक्ष, नेत्र चिकित्सालय के मध्य में स्थित है तथा इस चिकित्सालय के अधिकतर कर्मचारी मिशन के अभ्यासी हैं।

पय्यनूर के केन्द्र प्रभारी भाई टी.वी. कुन्हीकन्नन ने प्रातः ७.३० बजे सत्संग कराया, जिसमें ६० अभ्यासी उपस्थित थे। उन्होंने शिला का अनावरण किया। तत्पश्चात एक छोटा कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने वार्तायें दीं तथा बच्चों एवं कर्मचारियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

भाई कुन्हीकन्नन ने इस तथ्य पर जोर दिया कि यह केन्द्र आध्यात्मिकता एवं भौतिकता में समन्वय का एक अच्छा उदाहरण है। नेत्र चिकित्सालय के चेयरमेन भाई के. नीलकंटन ने उचित जीवन-शैली के महत्व, स्वच्छता एवं पर्यावरण की नैतिकता के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किये। नागपुर के अति. इन्कम टैक्स कमिश्नर (आई.आर.एस.) भाई एन. जयशंकर ने " मनुष्य जीवन में सेवा का महत्व" पर वार्ता दी। डायरेक्टर भाई उमेश, प्रशिक्षक एवं नेत्र चिकित्सालय के मेडिकल डायरेक्टर डॉ. एन. सुनील, मेडिकल सलाहकार डॉ. के. नारायनन और सेवना ट्रेड के चेयरमेन श्री फिलीपोज ने भी इस समारोह में अपने विचार अभिव्यक्त किये। इस पूरे अवसर के दौरान प्रिय गुरुदेव के प्रेम और आशीर्वाद की बरसात होती रही।

तिटोड़ी, सौराष्ट्र

प्रिय गुरुदेव की कृपा से पिछले २-३ महीने में सौराष्ट्र में, खासकर जामनगर से द्वारका क्षेत्रखन्ड में मिशन की गतिविधियों में काफी प्रगति हुई है। गुजरात के ज़ोन प्रभारी भाई राजेश अग्रवाल ने १३ जून, रविवार को खम्भालिया के निकट ग्राम तिटोड़ी का भ्रमण किया। उस समय तिटोड़ी केन्द्र में मात्र ७ नियमित अभ्यासी थे। इन अभ्यासी भाइयों से आग्रह किया गया कि वे उन लोगों से सम्पर्क करें, जो सत्संग में अनियमित हैं। परिणामस्वरूप, गुरुदेव के आशीर्वाद से २० अभ्यासी भाइयों ने रविवार के सत्संग में पुनः आना प्रारम्भ कर दिया। खम्भालिया के केन्द्र-प्रभारी भाई भविन पटेल ने गुजरात के ज़ोन-प्रभारी एवं करीब २५ स्थानीय अभ्यासियों की उपस्थिति में ध्यान-कक्ष का उद्घाटन किया।

सौराष्ट्र के इस छोटे से ग्राम तिटोड़ी में मिशन का केन्द्र पिछले ३ वर्षों से कार्यान्वित है। इस ग्राम की आबादी लगभग २५०० है।

विश्व पर्यावरण दिवस पर जामनगर, गुज़रात में वृक्षारोपण

५ जून को विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य पर जामनगर मेडिकल कॉलेज में अध्ययनरत् युवा अभ्यासियों नें केन्द्र प्रभारी भाई सचिन व्यास एवं अन्य अभ्यासी भाइयों की उपस्थिति में महाविद्यालय के प्रांगण में पौधे लगाये। संध्याकालीन समारोह में जामनगर महानगर पालिका की सदस्या श्रीमती हर्षिदा पंडया, श्रीमती सहारा मकवाना एवं बहन सगोया को आमन्त्रित किया गया। कार्यक्रम के प्रोत्साहन हेतु ४० से अधिक बच्चें एवं उनके माता-पिता इस शुभ अवसर पर उपस्थिति थे।

अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम

ग्वालियर

गुरुदेव की अनुकम्पा से ग्वालियर केन्द्र में १४ से १६ मई को अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें ग्वालियर तथा आसपास के केन्द्रों से ३१ अभ्यासियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षार्थी १४ मई को ही वहाँ एकत्रित हो गये थे और उन्होंने व्यक्तिगत सिटिंग लेकर अपने आप को कार्यक्रम के लिये तैयार करना शुरू कर दिया था। शाम को ७ बजे सत्संग के बाद स्वागत भाषण हुआ। तत्पश्चात इस कार्यक्रम के उद्देश्य को दर्शाते हुए एक नाटिका प्रस्तुत की गई, जिसमें अभ्यासियों को प्रशिक्षण कार्यक्रम से सम्बन्धित दिशानिर्देश भी दिये गये।

१५ मई को प्रथम सत्र में 'लक्ष्य को सुनिश्चित करना,' व 'ध्यान और सामूहिक सत्संग' विषय पर वार्तायें शामिल थी। इसके बाद प्रस्तुत किये गये विषय पर सामूहिक परिचर्चा और प्रश्नोत्तर सत्र हुआ। दूसरे सत्र में भाषण, सामूहिक परिचर्चायें और सफाई तथा डायरी-लेखन पर एक प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया गया। तीसरे सत्र का विषय 'दस नियम' पर आधारित था और इसमें, पहले तीन नियमों पर वार्तायें तथा आपसी वार्तालाप शामिल थे।

१६ मई को पहले सत्र की शुरुआत पिछले दिन के सत्र से आगे बढ़ाई गई और इस सत्र में अन्तिम सात नियमों को लिया गया। दूसरे सत्र में 'प्रार्थना,' और 'सतत-स्मरण' पर वार्तायें, सामूहिक परिचर्चायें और प्रश्नोत्तर सत्र को शामिल किया गया। तीसरे सत्र में 'प्रेम और कृतज्ञता' पर वार्तायें दी गईं।

हर दिन की शुरुआत सुबह ४ बजे, सुबह के ध्यान, आत्म-निरीक्षण, भाषणों का पाठन तथा मौन के साथ हुई। शाम के समय व्यक्तिगत सिटिंग, सफाई, सार्वभौमिक प्रार्थना और भजन होते थे।

दिल्ली

२३ मई २०१० को दिल्ली के आर. के. पुरम् आश्रम में आयोजित ए. टी. पी. कार्यक्रम में दिल्ली और गुड़गाँव केन्द्र के कुल ३६ अभ्यासियों ने भाग लिया। भाई ज्ञान सरीन द्वारा प्रस्तुत इस कार्यक्रम की शुरुआत रविवार के सत्संग के बाद करीब सुबह ९.३० बजे हुई तथा यह कार्यक्रम दोपहर २.३० बजे तक चला। इस कार्यक्रम को बहुत सराहा गया। प्रतिभागियों ने प्रस्तुति की रूपरेखा की प्रशंसा करते हुए कहा कि इसके द्वारा इतने कम समय में उन्हें सहज मार्ग की विस्तृत जानकारी मिली, जो उनके लिये बहुत लाभकारी थी।

मिर्ज़ापुर

मिर्ज़ापुर में पहली बार वहाँ के ज़ोनल प्रभारी भाई श्यामजी मल्होत्रा के विशेष प्रयासों से ६ जून को भाई सुरेश कुमार त्रिपाठी, जोकि एक प्रशिक्षक हैं, के

निवास-स्थान पर ए.टी.पी. का आयोजन किया गया, जिसमें मिर्ज़ापुर केन्द्र के ३२ अभ्यासियों ने भाग लेकर आध्यात्मिक लाभ उठाया। इस कार्यक्रम के मुख्य प्रस्तुतकर्ता कानपुर केन्द्र की बहन अंजु श्रीवास्तव और लखनऊ केन्द्र के भाई सुलभ सोनी थे। 'युथ विंग' के सदस्यों ने बड़े उत्साह के साथ इस कार्यक्रम में भाग लिया, जिसका आयोजन उन प्रशिक्षार्थियों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिये किया गया था, जो पद्धति में नये हैं और जो कामकाज और पद्धति के बारे में जानने के बेहद इच्छुक हैं।

साधना, सफाई और सतत-स्मरण जैसे विषयों पर विशेष ध्यान दिया गया ताकि अभ्यासी, पद्धति के हर उस पहलू को भलीभाँति जान सकें जो उनके आत्म-उत्थान में सहायक है।

नये अभ्यासियों के लिये कार्यक्रम, इन्दौर, मध्य प्रदेश

इन्दौर केन्द्र में २३ मई, रविवार को नये अभ्यासियों के लिये एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें करीब २५ अभ्यासियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों को अलग-अलग समूह में बाँटा गया और हर समूह के लिये प्रशिक्षकों ने समन्वयक की भूमिका अदा की। आम तौर पर एक समस्या पाई गई कि अभ्यासी, विभिन्न पहलूओं की सूक्ष्मता को, जैसा कहा गया है वैसा करने से पहले ही जानना चाहते थे। सत्र के अन्त में यह महसूस किया गया कि इस पर अमल किया जाना चाहिये। दस नियमों पर खुल कर चर्चा हुई और इस बात का ध्यान रखा गया कि सभी इसे अच्छी प्रकार से समझ सकें। सफाई और ध्यान पर उठे प्रश्नों के उत्तर दिये गये। और प्रतिभागियों को इस बात के महत्व के बारे में बताया गया कि इन सब चीजों से बढ़कर गुरुदेव की सहायता मायने रखती है।

साधना पर कार्यशाला, तेन्कासी, तमिलनाडु

~~'सहज मार्ग की साधना' पर १३ जून को तमिलनाडु के तिरुनेल्वेल्ली जिले के~~ तेन्कासी में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। हालांकि तेन्कासी एक छोटा केन्द्र है, पुलियानगुड़ी के ६ अभ्यासियों समेत २१ अभ्यासियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

अभ्यासियों को ४ समूह में बाँटा गया और हर समूह को साधना और आध्यात्मिकता पर एक विषय दिया गया। कार्यक्रम के अन्त में, सभी अभ्यासियों ने पूरे सत्र के दौरान स्वयं को गुरुदेव की अनन्त कृपा में डूबा हुआ पाया। यह इस बात का प्रमाण है, जो बाबूजी ने 'विस्पर्स' में कहा है कि "हर्ष, कृपा को आकर्षित करता है।" यह कार्यशाला सभी अभ्यासियों के लिये विचार-उत्प्रेरक थी।

लखनऊ में 24 जुलाई के समारोह की तैयारी

चिकमगलूर, कर्नाटक

लखनऊ में 24 जुलाई 2010 को गुरुदेव के 84वें जन्मदिवस समारोह की तैयारी पूरे जोर पर है। आश्रम के परिसर में चारों तरफ निर्माण कार्य चल रहा है। रहने के लिये टेन्ट, रसोईघर एवं अन्य स्टाल बनने शुरू हो गये हैं। नया ध्यान-कक्ष बनकर तैयार हो चुका है। सड़कों का निर्माण अपने अंतिम चरण में है और नई डॉर्मेटरी का निर्माण भी लगभग पूरा हो गया है। विशाल प्रवेश द्वार के निर्माण ने आश्रम को आकर्षक रूप दे दिया है। आने वाले अभ्यासियों की बड़ी संख्या को मद्देनज़र रखते हुए निर्माण तथा विकास की गतिविधियाँ बड़ी तेजी पर हैं। स्वयंसेवकों की टीम दिन-रात काम कर रही है ताकि योजनाबद्ध तरीके से सब काम सही समय पर पूरा हो सके।

प्रथम वर्षगांठ समारोह

कर्नाटक राज्य के चिक्कनयकाना हल्ली एवं हुलियार केन्द्र ने 13 जून 2010 को पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम के साथ अपनी पहली वर्षगाँठ मनाई। इस समय चिक्कनयकाना हल्ली केन्द्र में लगभग 35 एवं हुलियार केन्द्र में 20 अभ्यासी हैं। इस अवसर पर विभिन्न केन्द्र जैसे तुमकूर, तिप्तूर, सीएन हल्ली एवं हुलियार से लगभग 70 अभ्यासी, सीएन हल्ली केन्द्र में इकट्ठा हुए। "सहज मार्ग -जीने का तरीका" विषय पर वार्ता हुई, जिसमें साधना के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। इस के बाद नये अभ्यासियों ने अपने अनुभवों को सबके साथ बाँटा। कार्यक्रम का समापन शाम के सत्संग के साथ हुआ और सभी अपने प्रिय गुरुदेव की याद में अपने-अपने केन्द्रों के लिए रवाना हो गए।

8 अप्रैल को प्रशिक्षक भाई आर. एस. सत्यनारायण ने अपने घर पर चिकमगलूर के लगभग 40 अभ्यासियों की एक सभा आयोजित की। " विस्पर्स फ्रॉम द ब्राइटर वर्ल्ड " के एक संदेश का कन्नड़- अनुवाद पढ़ा गया।

दोपहर के भोजन के बाद बहन नागरतना, भाई रामचन्द्र, भाई दिनेश गोखले, भाई डॉ सतीश, भाई देवराज, बहन परिमला और बहन राजम्मा ने अपने अनुभवों को सबके साथ बाँटते हुए बताया कि किस प्रकार सतत् स्मरण तथा साधना के सही अभ्यास से उन्हें अपना जीवन जीने में मदद मिली। इस सभा का समापन शाम को 6 बजे, प्रतिभागियों द्वारा केन्द्र को विकसित करने के सुझावों के साथ हुआ। समय कैसे पंख लगाकर उड़ गया, इस बात का किसी को आभास ही नहीं हुआ।

खेल दिवस- वड़ोदरा, गुजरात

30 मई 2010 को वड़ोदरा केन्द्र के स्वयंसेवकों ने सत्संग के दौरान अभ्यासियों के बच्चों के लिए एक खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया। आश्रम के लॉन में आयोजित इस प्रतियोगिता में 3-15 वर्ष के आयु के लगभग 25-30 बच्चों ने भाग लिया। बच्चों को उनकी आयु के अनुसार बाँटा गया था। 3 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए आलु-दौड़ , 5-10 साल के बच्चों के लिए 100 मीटर दौड़, 10 साल से बड़े उम्र के बच्चों के लिए नींबू-चम्मच दौड़ तथा बोरे की दौड़ आयोजित की गई। बच्चों ने सभी खेलों का भरपूर आनन्द उठाया। इस प्रतियोगिता ने बच्चों में एकाभाव, आनन्द और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना जागृत की। माता-पिता के साथ-साथ स्वयंसेवकों ने भी कार्यक्रम का आनन्द लिया।

प्रकाश के केन्द्र

"आप ही प्रयोग हैं, आप ही प्रयोग करने वाले हैं और आप ही उस प्रयोग का परिणाम होंगे। यदि आप सोचते हैं कि आप अपने गुरुदेव से या मिशन से कोई प्रतिबद्धता कर रहे हैं, तो यह बेवकूफी है। ऐसी कोई प्रतिबद्धता नहीं होती, प्रतिबद्धता हमेशा सिर्फ अपने आप से होती है। हर एक व्यक्ति, जो इस बात को याद रखेगा, वह भविष्य में समझदारी से व्यवहार करेगा। जो लोग इस बात को याद नहीं रखेंगे और मूर्खतापूर्ण तरीके से व्यवहार करते करेंगे, उनके लिये, मुझे अफसोस से कहना पड़ रहा है कि उनका भविष्य बहुत निराशाजनक है।"

गुवाहाटी

गुवाहाटी, आसाम राज्य की राजधानी है। यहाँ का आश्रम अभी हाल ही में बना है, जबकि तिनसुकिया का आश्रम बहुत पुराना है और पूज्य बाबूजी की उपस्थिति से अनुग्रहित हुआ है।

१० से १२ फरवरी, १९९३ को गुरुदेव ने गुवाहाटी केन्द्र का दौरा कर इस केन्द्र की शोभा बढ़ाई। उनके इस प्रवास के दौरान सत्संग व सभायें एक कल्याण भवन में आयोजित की गईं। गुरुदेव ने बार-बार इस बात का जिक्र किया कि आसाम उनके लिये कोई नई जगह नहीं है और बचपन में जब वह अपने चाचा श्री भद्रन के पास आते थे, जो भारतीय वन सेवा में कार्यरत थे, तब वह मीलों पैदल चला करते थे तथा उन्होंने घोड़ों और हाथियों पर आसाम में चारों तरफ सवारी की हुई है। उन्होंने बड़े प्रेम से याद करते हुए यह भी बताया कि गुवाहाटी एक जंगल हुआ करता था और वहाँ पर एक विशाल नदी बहा करती थी। उन्होंने इस बात का भी जिक्र किया कि वे अपनी युवावस्था के दौरान संसार भर में जहाँ भी गये, उस समय बाबूजी का काम वहाँ पर पूरे जोरों-शोरों पर था और आसाम भी इस बात का अपवाद नहीं है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि बाहर से आये हुए हमारे अभ्यासियों को वहाँ की भाषा सीखनी चाहियें और स्थानीय लोगों को मिशन में लाना चाहियें ताकि वे गुरुदेव को दिया गया अपना वादा पूरा कर सकें।

१९९८ में ६५०० वर्ग फीट की भूमि के कुछ भाग को दान किया गया था तथा कुछ भाग को स्थानीय केन्द्र ने खरीदा था, जिस पर घास व बाँस से एक सुन्दर और कच्ची झोपड़ी का निर्माण किया गया। इससे पहले सत्संग मैत्री-मन्दिर नाम के एक अनाथालय में होता था।

२००९ में वहाँ पर एक अर्ध-स्थायी ढाँचा तैयार किया गया और अब आश्रम में पहले से बड़ा, करीब १६०० वर्ग फीट का ध्यान-कक्ष है जिसमें रविवार के सत्संग में उपस्थित होने वाले करीब १०० अभ्यासियों के आराम से बैठने की जगह है। यहाँ पर गुरुदेव के लिये पूरी तरह से सुसज्जित एक कमरा है तथा एक रसोईघर, बाल-केन्द्र, चौकीदार का कमरा और एक अतिथि-गृह भी है और तीनों तरफ एक सुन्दर सा बगीचा है।

यह आश्रम बहुत अच्छी जगह पर स्थित है और इसी कारण ज़ोनल स्तर पर मिशन के समारोह व अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिये इसका बखूबी उपयोग किया जाता है। सन् २००४ में मिशन के कई कार्यकर्ता यहाँ पर आये: जैसे भाई यू. एस. बाजपेयी ने आसाम और उत्तरपूर्व का बड़े पैमाने पर दौरा किया, बहन सीता कुचितिपादम ने २००७ में आसाम और उत्तर-पूर्व के लिये वी बी एस ई की कार्यशाला का आयोजन किया और भाई ए. पी. दुरई ने सन् २००८ में गुवाहाटी रिफाइनरी में एक 'ध्यान प्रशिक्षण कार्यक्रम' का आयोजन किया।

यद्यपि यह आश्रम वर्तमान अभ्यासियों की संख्या को देखते हुए काफी बड़ा है और विकास के लिये भी काफी जगह है, लेकिन भविष्य में विकास तथा आसाम में ज़ोनल आश्रम की सम्भावना को मद्देनज़र रखते हुए २००९ में मिशन ने हवाई-अड्डे के पास एक बहुत बड़ी जमीन खरीदी। अब ज़ोनल आश्रम की जमीन को हाउसिंग सोसाइटी के साथ मंज़ूरी मिल गई है, गुरुदेव ने प्यार से इसे 'सहजपुरम् सोसाइटी' का नाम दिया है।

अभी ज़ोनल आश्रम के इस सपने को साकार होने में बहुत समय लगेगा और स्थानीय अभ्यासियों के इस प्रयास में हम उनकी अति शीघ्र सफलता की कामना करते हैं।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2009 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.